(ब) इकाई (1)

निर्धारित पाठ्यक्रम का भाषिक पक्ष एवं शिक्षण हेतु निहितार्थ -

मीरा सिंह, रीता महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

पाठ्यक्रम का भाषिक पक्ष - चूँकि भाषा - भाव, विचार, अनुभवों तथा अपने मन के भावों तथा उद्गार को प्रकट करने का साधन है। वर्तमान युग में अधिकतर विद्वान, विचार तथा अनुभवों को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त होने वाले ध्वनि संकेतों को ही भाषा की संज्ञा देते हैं।

भाषा एक व्यवस्थित पद्धति है, यह भाषा बोलने वाले के विचारों को श्रोता तक पहुँचाती है अर्थात भाषा विचार - विनिमय का साधन होती है।

माध्यमिक शिक्षा की पाठ्यचर्या में भाषा - हमारे देश में कक्षा 9 से 12 तक की शिक्षा को माध्यमिक शिक्षा कहा जाता है। इस स्तर तक के शिक्षा के मुख्य उद्देश्य पूर्व माध्यमिक शिक्षा के समान ही होते हैं। इसमें 9 से 10 तक के बच्चों को वही तीन भाषाएँ सीखनी होती हैं। इस स्तर पर भाषा की शिक्षा पर 30 प्रतिशत और मातृभाषा पर 10 प्रतिशत बल देना चाहिए।

इस स्तर पर बच्चों को मातृभाषा के विविध रूपों से परिचय हो जाना चाहिए। जिससे वे मातृभाषा के साहित्य में रुचि लेने लगें।

हमारे देश में उच्च माध्यमिक शिक्षा स्तर पर मातृभाषा के साहित्य की शिक्षा की व्यवस्था है। और वह भी ऐच्छिक रूप में तथा वैकल्पिक विषय के

प्राचार्य
मीरा सिंह रीता महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान

रूप में। यद्यपि इस स्तर की शिक्षा का माध्यम भी मातृभाषा ही है। अतः इतना प्रयत्न तो करना चाहिए कि किसी भी विषय को पढ़ाते समय या किसी क्रिया को कराते समय बच्चों की मौखिक एवं लिखित भाषा में परिवर्तन किया जाये।

मातृभाषा ही शिक्षा का माध्यम क्यों?

जहाँ तक शिक्षा के माध्यम की बात है लगभग सभी स्वतन्त्र देशों में शिक्षा का माध्यम वहाँ की मातृभाषाएँ हैं। हिन्दी भाषा मातृभाषा सीखने में सहायक सिद्ध हो सकती है क्योंकि इसकी सहायता से मातृभाषा के रूप और संगठन को समझेंगे, उसके शुद्ध प्रयोग करने तथा उसे बोलने और सीखने के अभ्यास में सहायता मिलती है। हिन्दी का ज्ञान मातृभाषा में नये वाक्य-विन्यास, नई शब्दावली, नये मुहावरे एवं सूक्तियों के प्रयोग में सहायता प्रदान करता है।

पाठ्यक्रम का शिक्षण हेतु निहितार्थ—

जहाँ तक मातृभाषा शिक्षण के सामान्य उद्देश्यों को प्राप्त करने का सम्बन्ध है, इन उद्देश्यों का सम्बन्ध मनुष्य के सामाजिक जीवन से है, इसलिए इन सबकी प्राप्ति के लिए प्रारम्भ से ही आधारशिला तैयार की जाती है।

किसी भाषा के शिक्षण का मुख्य उद्देश्य बालकों में ऐसी योग्यता उत्पन्न करना है कि वे दूसरों द्वारा मौखिक अथवा लिखित रूप में अभिव्यक्त विचार को पूर्णरूप से समझ सकें और अपने विचारों ~~अस~~ तथा भावों को मौखिक

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

अथवा लिखित रूप में सफलतापूर्वक प्रभावशाली ढंग से प्रकट कर सकें, परन्तु उच्च - कक्षाओं में भाषा के साथ उनके साहित्य की भी शिक्षा दी जाने लगती है। मातृभाषा शिक्षण के उद्देश्य अन्य भाषा के शिक्षण के उद्देश्यों से कुछ भिन्न एवं अधिक होते हैं। इसे निम्नलिखित क्रम में व्यक्त किया जा सकता है:—

(1-) बालकों में दूसरों की मौखिक एवं लिखित भाषा को पूर्णरूप से समझने की योग्यता का विकास करना।

(2-) छात्रों में अपने विचार एवं भावों को स्पष्ट एवं प्रभावशाली शाली ढंग से मौखिक व लिखित रूप में व्यक्त कर सकने की योग्यता का विकास करना।

(3-) छात्रों में मातृभाषा साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न करना।

(4-) छात्रों को मानव जीवन और उनकी विभिन्न परिस्थितियों का ज्ञान कराना और उनकी रुचियों, अभिरुचियों और प्रवृत्तियों का सामाजिक आदर्श के अनुकूल परिष्कार करना।

(5-) छात्रों में सृजनात्मक कार्य शक्तियों का विकास करना।

(6-) छात्रों को अपनी सभ्यता और संस्कृति से परिचित कराना।

(7-) मातृभाषा साहित्य का रसास्वादन करने योग्य बनाना।

(8-) सत् साहित्य के सृजन की ओर उन्मुख करना।

माध्यमिक स्तर पर मातृभाषा-शिक्षण के उद्देश्य—

इस स्तर पर पहुँचने तक छात्र को अपनी मातृभाषा हिन्दी की जानकारी दे दी जाती है। इस स्तर पर

हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य निम्न हो सकते हैं :—

(1.) छात्रों में पठन कला की निपुणता की भावना भरना।

(2.) छात्रों में सौन्दर्यानुभूति की भावना का विकास करना।

(3.) छात्रों को व्याकरण के नियमों आदि से परिचित कराना।

(4.) उचित गति से लिखने का अभ्यास करना।

(5.) क्षेत्रीय लोकोक्तियों एवं मुहावरों का ज्ञान कराना।

(6.) छात्रों के शब्द एवं सूक्ति भण्डार में वृद्धि करना।

(7) बालकों के निबन्ध, संवाद, सारांश-पत्र आदि लिखने की कला में दक्षता पैदा करने का प्रयास करना।

(8.) उनमें स्वाध्याय की प्रवृत्ति विकसित करना।

(9.) छात्रों में अभिनय, अनुकरण एवं संवाद की योग्यता पैदा करना।

(10.) मौन वाचन की आदत का विकास करना।

इसप्रकार मातृभाषा हिन्दी शिक्षण के सामान्य उद्देश्यों की परिधि बहुत ही विस्तृत होती है। इसकी अन्तिम सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया